डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–11 मई, 2020)

प्रयोगवाद की मुख्य प्रवृत्तियां

प्रगतिवादीवादी काव्य की सपाटबयानी तथा जीवन और समस्याओं की अभिव्यक्ति की एकरसता के खिलाफ नये प्रयोगों का आंदोलन चला। 'प्रयोगवाद' नाम उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो कविताएं नयी खोजों, नये बोधों, नयी संवेदनाएं, नयी षिल्पगत विषेषताएं और प्रगतिषील विचारों को लेकर उपस्थित हुईं। 'तारसप्तक' (सन् 1943) के प्रकाषन से प्रयोगवाद' का आरंभ माना गया कुछ लोग प्रयोगवादी कविता को नयी कविता की पृष्ठभूमि के रूप में भी देखते हैं। ऐसे लोगों के विचार में छायावाद और प्रगतिवाद की ह्रसोन्मुख दषा में अहंनिष्ठ घोर व्यक्तिवादी काव्य धारा, जिसका प्रारंभिक रूप प्रयोगवाद नाम से और विकसित रूप नयी कविता के नाम से समझना चाहिए। आमतौर पर 'दूसरा सप्तक' के प्रकाषन (सन् 1951) के साथ प्रयोगवाद का समापन माना जाता है, किन्तु कुछ लोग इसे तीसरा सप्तक के प्रकाषन (सन् 1959) तक मानते हैं। वादों से परे ये प्रयोग उस युग के सभी कवियों की निजी विचारधारा की निजता के अनुकूल थे, किसी खास कवियों या विचारधाराओं तक सीमित नहीं। 'प्रयोगवाद' के प्रवर्तक व अगुआ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय हैं। 'प्रयोगवाद' और 'प्रयोगषील' षब्द को लेकर काफी विवाद हुआ, पर अंततः 'प्रयोगवाद' नाम ही प्रचलन में रह गया। जानकारी के लिए बता दूं कि यह नाम नंददुलारे बाजपेयी का दिया हुआ है। प्रयोगवाद के प्रमुख कवियों में अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती आदि हैं। इसके साथ ही प्रपद्यवाद के नकेनवादी कवियों नलिन विलोचन षर्मा, केषरी कुमार व नरेष मेहता की कविताएं भी प्रयोगवादी कविताएं मानी जाती हैं।

वस्तुतः प्रयोगवाद का उदय प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था। प्रगतिवादी कविता में जिस तरह की गंभीरता, तन्मयता, विविधता, व्यक्ति स्वातंत्र्य, अभिव्यंजना, अनुभूति की गहराई, संवेदनषीलता और कला के उत्कर्ष की अपेक्षा की गयी, वह हासिल नहीं हो सकी। प्रायः मार्क्सवादी विचारधारा को तरजीह दी गयी, उसके सिद्धांतों का यषोगान और लाल झंडे को सलाम किया गया, उसे हृदय की अनुभूति का विषय नहीं बनाया गया, जिसके कारण प्रगतिवादी कविता केवल षोषित वर्ग के प्रति एक बौद्धिक सहानुभूति बनकर रह गयी। प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों में प्रयोगषीलता, बौद्धिकता का आग्रह, घोर वैयक्तिकता, अनुभूति एवं यथार्थ का संष्लेषण, नई राहों का अन्वेषण, वाद से मुक्ति, साहस और जोखिम, काम संवेदना, षिल्पगत प्रयोग और भाषा–षैलीगत प्रयोग आदि है–

1. <u>प्रयोगशीलता</u> :– वैसे तो प्रयोगषीलता की प्रवृत्ति सभी कालों में मानी जाती है किन्तु छायावाद और प्रगतिवाद में भी उसकी आरंभिक प्रवृत्ति देखी जा सकती है। छायावादी कवि जयषंकर प्रसाद ने 'प्रलय की छाया', और 'करूणा की कछार' में वस्तु तथा छंद संबंधी नवीनता का प्रयोग किया था। इसी तरह प्रगतिवाद में निराला ने 'कुकुरमुत्ता' और 'नये पत्ते' में प्रयोगवादी प्रवृत्ति की लय विकसित की है। इसी कड़ी में प्रयोगवादियों ने नये विषयों, नये विचारों, और नयी अभिव्यंजना प्रणाली को व्यापक रूप से प्रयोगषीलता को तरजीह दी। कला

और साहित्य के क्षेत्र में नये प्रयोगों, बिम्बों, प्रतीकों की सार्थकता तभी है, जब वे समाज और जीवन के यथार्थ को जीवन–संघर्ष के लिए प्रतिष्ठित कर सकें, सिर्फ प्रयोग के लिए प्रयोग नहीं। बाद चलकर प्रयोगवाद में जीवन की अपेक्षा महज प्रयोग को महत्त्व दिया गया। समाज की जगह व्यक्ति को और जीवन संघर्ष की जगह आत्म संघर्ष को। वे प्रयोग की आड़ में सभी तरह की विकृतियों को अभिव्यक्त करने लगे। इस तरह प्रयोगबहुलता और उसकी विकृतियों ने प्रयोगवाद की प्रयोगषीलता का क्षय किया। बावजूद इसके प्रयोगवाद की प्रयोगषीलता ने कविता में जिस आंदोलन को जन्म दिया, वह सभी स्तरों पर प्रयोग और उसकी नवीनता को लेकर ही था। इसलिए नये–नये प्रयोगों का एक अपना महत्त्व है, जिसमें विषयवस्तु एवं भाषा और षिल्प की नवीनता ने सभी को आकर्षित किया।

2. **<u>वैयक्तिकता का आग्रह</u>** :– प्रयोगवाद में समाज की जगह व्यक्ति केन्द्र में आ गया। समाजवाद और साम्यवाद की प्रतिष्ठा के अति उत्साह में व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व, अस्तित्व, स्वतंत्रता, अस्मिता आदि दबकर लुप्त होने लगा था, जिसके कारण वैयक्तिकता का विस्फोट हुआ। इसके साथ ही मनोविष्लेषणवाद और अस्तित्ववाद से प्रभावित होने के कारण भी प्रयोगवादी कवियों ने चरम वैयक्तिता को तरजीह दी। समाज और सामाजिकता की आकांक्षा केवल 'लालसा' या 'ललक' के रूप में रह गया। इसलिए वह केवल द्वीप बनकर रह गया–

किन्तु हम हैं द्वीप
हम धारा नहीं हैं

फ्रायड के यौनवादी विचारों की अभिव्यक्ति व्यक्ति के स्तर पर होने लगी। एक चित्र है–

आह मेरा ष्वास है उतप्त–
धमनियों में उमड़ आयी है लहू की धार–
प्यार है अभिषप्त,
तुम कहां हो नारि ?

बावजूद इसके प्रयोगवादी कवियों ने जिस यथार्थ का चित्रण किया वह प्रगतिवाद के षोषित वर्ग और निम्न वर्ग या किसान–मजदूर वर्ग के अनजीया–अनभोगा जीवन से अलग स्वयं का जीया हुआ, भोगा हुआ था। यही कारण है कि उनकी कविताओं में विस्तार कम किन्तु गहराई अधिक है। समाज के प्रति त्याग और समर्पण को भुलाया नहीं जा सकता है। अज्ञेय ने स्पष्ट रूप में कहा–

किन्तु हम हैं द्वीप
हम धारा नहीं हैं
स्थिर समर्पण है हमारा
द्वीप हैं हम।

वैयक्तिकता का आग्रह यहां तक उपस्थित हुआ, जहां से 'एकला चलो रे' की भावना विकसित हुई। अज्ञेय द्वारा चित्रित व्यक्तिवादी आग्रह का एक सुन्दर चित्र है–

उड़ चल हारिल, लिये हाथ में
यही अकेला ओछा तिनका
उषा जाग उठी प्राची में
कैसी बाट, भरोसा किनका !

3. <u>बौद्धिकता की मांग</u>:– प्रयोगवादी कवियों ने रागात्माकता के स्थान पर अनेक बौद्धिक विचारों को अपनी कविता का विषय बनाया। आधुनिक वैज्ञानिक युग में बुद्धि की प्रधानता बढ़ने के कारण उसकी अभिव्यक्ति कविता में भी होने लगी। यह माना जाने लगा

कि जीवन सत्य की सही अभिव्यक्ति नॉलेज पावर से ही संभव है। अति बौद्धिकता के आकर्षण ने प्रयोगवादी कवियों की भावना में 'बुद्धि–रस' से ग्रसित, 'प्रष्नाकुल' और 'विस्मयकारी' बना दिया, जिससे कवियों की हर भावना की अभिव्यक्ति में वह दिखायी पड़ने लगा। इन्हीं से वे जीवन सत्य को व्याख्यायित करने लगे, जिसके कारण बौद्धिक रूप में सांस्कृतिक ढ़ांचा चरमराकर कविता को 'बुद्धि–रस', 'प्रष्न' और 'विस्मय' की ध्वनि बना दिया। इससे संबंधित एक चित्र है–अंतरंग की इन घड़ियों पर छाया डाल दूं !/अपने व्यक्तित्व को एक निष्चित सांचे मे ढ़ाल दूं !/निजी जो कुछ है अस्वीकृत कर दूं !/...तुम्हें न पहचानूं !/तुम्हारी त्वदीयता को षून्य में उछाल दूं !/तभी,/हां,/षायद तभी.....।

4. <u>अनुभूति एवं यथार्थ के द्वारा नये मूल्यों का चित्रण</u> :– प्रयोगवादी कवियों ने अनुभूति एवं यथार्थ के माध्यम से युगबोध और नये जीवन मूल्यों का चित्रण किया। उन्होंने द्वितीय विष्वयुद्ध से उत्पन्न युगीन त्रास, यातना, द्वन्द्व, घुटन आदि का यथार्थ चित्रण किया। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की आक्रामकता, संवेदनहीनता और बर्बरता ने मनुष्य की आस्था, विष्वास, करूणा और प्रेम जैसी चिरन्तन भावनाओं को व्यापक रूप में आहत किया था। प्रयोगवादी कवियों ने इन मूल्यों के साथ मानव मूल्यों को अपनी कविताओं में विषेष स्थान दिया। व्यक्ति के चष्में से सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित किया गया। विष्व मानवतावाद, परस्पर सहयोग, विष्वषांति और अंतरराष्ट्रीय विचारों को ग्रहण कर भारतीय संस्कृति का विकास किया।

प्रगतिवाद में युग चेतना का महत्त्व था। संपूर्ण युग की बात होती थी। प्रयोगवाद में युग की जगह क्षण या क्षणिक अनुभूतियों को महत्त्व दिया जाने लगा। प्रयोगवादी कवि क्षण को पूरा जीना चाहते हैं युग को नहीं। इसलिए यहां क्षणिकता का बोध प्रायः कविताओं में मिलता है। क्षण समय का लघुत्तम रूप है, जिसे जी कर कवि समय की अवाध गति के साथ जीना चाहता है। इसी प्रक्रिया में वह नये पथ का सृजन भी करता है और उसके लिए प्रेरित भी करता है। 'कितनी नावों में कितनी बार' कविता में अनंत यात्रा की प्रक्रिया में अनंत सत्य और अनंत मूल्यों की खोज है। प्रेम के धरातल पर प्रयोगवादी प्रेम का किस्म षहरी, वैयक्तिक और बौद्धिक समर्पण है। दाम्पत्यमूलक प्रेम या सर्वहारा के लिए सहज प्रेम या समर्पण नहीं है।

<u>भाषा और शिल्प</u> :– प्रयोगवादी कवियों ने भाषा और षिल्प को बहुत महत्त्व दिया है। उसका तेवर लोक के लिए अभिधात्मक न होकर पूरी तरह बौद्धिक और लाक्षणिक हो गया। बिंबों और प्रतीकों तथा लक्षणा षक्ति के प्रयोग और उपमानों की नवीनता ने प्रयोगवाद को विषिष्ट आधार दिया। अब संवेदना या भाव षिल्प के सौंदर्य के साथ प्रकट होने लगा। भाषा और षिल्प के सौंदर्य की नवीनता का एक उदाहरण है, जिसमें कवि ने प्रगतिवाद को नकारा और प्रयोगवाद को स्थापित करते हुए अभिव्यक्ति प्रदान की है– *अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली/तारिका/अब नहीं कहता,/या षरद के भोर की नीहार–न्हायी कुँई,/टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो/ नहीं कारण की मेरा ह्रदय उथला या सूना है/या कि मेरा प्यार मैला है।/बल्कि केवल यही; ये उपमान मैले हो गये हैं।/देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।/कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।'* षिल्प के प्रति विषेष आग्रह को देखकर ही आलोचकों ने प्रयोगवादी कवियों को रूपवादी (Formist) कहा। इस प्रकार प्रयोगवाद में समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचारधारा के स्तर पर अनुभव को और विषय वस्तु के धरातल पर कलात्मकता को प्रमुखता मिली।

दिनांक : 11/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**